प्राक्कथन

प्राक्कथन

समाजशास्त्र समाज के विभिन्न वर्गों तथा उनके सामाजिक जीवन का सुव्यवस्थित अध्ययन है। इसका संबंध मनुष्य के समूचे सामाजिक जीवन और संपूर्ण मानव इतिहास से है। समाज, सामाजिक संबंध, सामाजिक नियंत्रण, सामाजिक समस्याएँ आदि विषयों पर चिन्तन मनन करना समाजशास्त्र का मुख्य लक्ष्य है। साहित्य की विवेचना में समाजशास्त्रीय पहलू का विशेष महत्व है। समाज के परिवर्तन के साथ साहित्य और साहित्य के परिवर्तन के साथ समाजशास्त्रीय दृष्टियों में भी परिवर्तन आ जाते हैं। प्रत्येक साहित्यिक विधा के अनुरूप ही समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन ही वह एकमात्र रास्ता है, जिससे साहित्य एवं समाज की वास्तविकता की जानकारी मिल सकती है। समाज पर साहित्य के व्यापक और गंभीर प्रभाव के कारण उसके अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व है।

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक है **'हिन्दी दलित कविता का समाजशास्त्रीय अध्ययन १९९० से लेकर २०१० तक'।** हिन्दी दलित कविता का समाजशास्त्रीय अध्ययन पर बहुत कम शोधकार्य हुआ है। डॉ. विमल थोरात का 'मराठी दलित कविता और साठोत्तरी कविता में सामाजिक और राजनीतिक चेतना', डॉ. रजतरानी मीनू का 'हिन्दी दलित कविता' (१९८०-१९९०), रमेशचन्द्र चतुर्वेदी का 'बीसवीं सदी की हिन्दी दलित कविता', जिषा एम. एन. का 'आधुनिक हिन्दी कविता : दलित आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में' आदि अध्ययन में समाजशास्त्र पर कम बल दिया गया है। इसके अलावा डॉ. हरिनारायण ठाकुर का 'दलित साहित्य का समाजशास्त्र', कंवल भारती का 'दलित कविता का संघर्ष' आदि ग्रन्थों का भी प्रकाशन हो चुका है। लेकिन विशद रूप से 'हिन्दी दलित कविता का समाजशास्त्रीय अध्ययन (१९९० -२०१०)' नामक विषय पर शोध कार्य अब तक नहीं हुआ है। अतः यह विषय सर्वथा नया एवं प्रासंगिक है।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध प्रबंध को चार अध्यायों में बाँटा गया है।

१. **साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन : नये आयाम**

२. **दलित कविता : भावभूमि और विचारभूमि**

३. **दलित कविता का वस्तुपक्ष : समाजशास्त्रीय अध्ययन**

४. **दलित कविता का शिल्पपक्ष : समाजशास्त्रीय अध्ययन**

अन्त में उपसंहार है।

पहला अध्याय है - **साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन : नये आयाम।** समाज से साहित्य के सम्बन्ध की व्याख्या करना साहित्य के समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है। समाजशास्त्रीय विश्लेषण पद्धति एक वैज्ञानिक पद्धति है। इस बात की सर्वसहमति है कि एक ओर समाजशास्त्र समाज के संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक स्वरूप पर प्रयुक्त होने वाले व्यापक सामान्यीकरण को प्रस्तुत करता है तो दूसरी ओर साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन मानव के नवीन दृष्टिकोण का परिणाम है। प्रस्तुत अध्याय में साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन के नये आयामों को प्रस्तुत किया है। साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन के अंतर्गत साहित्य, समाज एवं समाजशास्त्र का अर्थ और परिभाषा, सामाजिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन, समाजशास्त्र की धाराएँ एवं पद्धतियाँ आदि का अध्ययन प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया गया है। समाजशास्त्र सिर्फ साहित्य से ही नहीं अन्य शास्त्रों से भी संबंध रखता है। साहित्य के समाजशास्त्र की धाराओं में अनुभववादी धारा साहित्य के प्रयत्न को आवश्यक मानती है। वे प्रतीति और अनुभव से प्राप्त तथ्यों को महत्व देते हैं। अनुभववादी धारा इंद्रियबोध, प्रतीति और अनुभव पर ज़ोर देते हैं, यह धारा समाज में मौजूद पीड़ा, गुलामी, मूल्यों के परस्पर

विरोध, विचारधाराओं की टकराहट और वर्गों के संघर्ष में तटस्थता की वकालत करती है। अतः इस पर विशेष दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है।

हम जानते हैं कि साहित्य का समाजशास्त्र स्वयं अपने आप में एक पद्धति है। एक सार्वभौमिक पद्धति के रूप में यह अनुसंधान को प्रेरित करती है और उन परंपराओं, मूल्यों तथा आदर्शों को खोजने का प्रयास करती है जिसमें किसी कृति का सृजन हुआ है। साहित्य में लेखक, पाठक, आलोचक, उनके परिवेश तथा प्रकाशक एवं उनकी अन्तः क्रियाएँ विशेष महत्व रखते हैं जिनका समाजशास्त्रीय पद्धति द्वारा विवेचन कृति के मूल्यांकन में सहायक होता है। उत्तर आधुनिक संदर्भ बहु-संस्कृतियों के निवास केलिए जगह देता है और सभी समूहों को बोलने का अधिकार भी देता है। उसके केंद्र में दलित, महिला, हाशिएकृत तथा अश्वेत लोग रहते हैं। भारतीय समाज और संस्कृति के इतिहास में दलितों और स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषण करते हुए भारतीय साहित्य में उनकी उपस्थिति और अनुपस्थिति के कारणों को खोजने-परखने में साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता है। अतः प्रथम अध्याय में समाजशास्त्रीय अध्ययन के नये आयामों पर विशेष रूप से अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है- **दलित कविता : भावभूमि और विचारभूमि**। हिन्दी दलित कविता हमेशा गतिशील रही है। इसमें दलित व दमित समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण है, अस्मिता का दर्शन है। प्रस्तुत अध्याय में दलित कविता की भावभूमि प्रस्तुत करके उसके उद्‌भव और विकास के ऐतिहासिक परिदृश्य पर बल दिया गया है। दलित कविता की विचारभूमि में ऐसे तथ्यों का अध्ययन प्रस्तुत किया है, जो दलित कविता को पर्याप्त मनोबल प्रदान किया है। दलित कविता की भावभूमि को सही ढंग से विवेचन करने से लोकगीत विशेषकर परंपरागत दलित गीत का महत्व सर्वाधिक है। क्योंकि दलित कविता का मूल प्रतिरोधात्मक सांस्कृतिक स्वर इन्हीं गीतों में मिलता है। अतः ऐसा माना जा सकता है कि इन्हीं दलित गीतों से दलित कविता का आरंभ हुआ

होगा। ये गीत मानव के नैसर्गिक ताल-लय और मौखिक वाणी से संपन्न हैं, जो हमेशा प्रकृति के साथ रहते हैं, खिलाफ नहीं। दलित कविता के ऐतिहासिक परिवेश के क्रमबद्ध विवेचन से यह सिद्ध होता है कि संघकालीन कृतियों, नाथ-सिद्ध, संत साहित्य से लेकर आधुनिक काल में हीरा डोम, स्वामी अछूतानन्द हरिहर, बिहारीलाल हरित आदि कवियों का योगदान दलित कविता की जड़ को मज़बूत बनाया है। इस दृष्टि से आधुनिक काल में ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, जयप्रकाश कर्दम, कंवल भारती, सूरजपाल चौहान, पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, हरिकिशन सन्तोषी, माता प्रसाद, डॉ. एन सिंह, असंगघोष, मुकेश मानस आदि की रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। दलित कविता के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है, जैसे सुशीला टाकभौरे, रजनी तिलक, कुसुम मेघवाल, पूनम तुषामड़, कावेरी, कान्ता भीमराव आदि। उल्लेखनीय है कि इसकी पृष्ठभूमि में गैर दलित कवियों का योगदान भी रहा है। दलित कविता की विचारभूमि में महात्मा गौतम बुद्ध, महात्मा फुले, डॉ. बाबा साहब अंबेडकर, मार्क्स, पेरियार रामस्वामी नायकर, श्री नारायण गुरु आदि महात्माओं की विचारधाराओं का योगदान दलित समाज को नया ज़ोर एवं ताकत देने में सफल निकले हैं। दलित अस्मिता एवं चेतना के प्रचार-प्रसार में विशेष रूप से दलित पैंथर का नाम उल्लेखनीय है। दलित समाज को नया मोड देने में दलित आन्दोलन और साहित्यिक आंदोलन का महत्वपूर्ण स्थान है।

तीसरा अध्याय है - **दलित कविता का वस्तुपक्ष : समाजशास्त्रीय अध्ययन**। मोटे तौर पर दलित कविता में निहित जो विषय है, जो समाज है वही इसकी वस्तु है। जिन सामाजिक व्यवस्था में विश्वास या परंपराओं के नाम पर आदमी से आदमी होने का अधिकार छीन लिया गया है, दलित कविता उसका निषेध करती है। प्रस्तुत अध्याय में भारतीय समाज के वर्ण-जाति व्यवस्था, संस्कृति, परंपरा, राजनीति, नारी, अंबेडकरवादी विचारधारा, मानवतावाद, समतावाद आदि तथ्यों पर विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। दलित कविता का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज की वर्ण-जाति व्यवस्था के खिलाफ

प्रतिरोध, प्रतिशोध तथा क्रांति उत्पन्न करके उसे समाज से मिटाना है । क्योंकि वर्ण एवं जाति व्यवस्था मानवतावाद तथा समतावाद के खिलाफ है। दलित कविता के सामाजिक स्वर में समाज में दलितों के प्रति हो रहे शोषण, अन्याय, अत्याचार आदि के अध्ययन करते हुए सामाजिक परिवर्तन करने का प्रयास दलित कविता ने किया है। दलित कविता का सांस्कृतिक स्वर अधिक प्रबल है। क्योंकि दलितों का जीवन, संस्कृति एवं परंपरा से जुड़ा हुआ है। वे सदियों से इस धरती के रक्षक रहे हैं, भक्षक नहीं। समाज के वर्चस्ववादी चिंतकों ने संस्कृति को जीवन की समग्र पद्धति के रूप में माना है। इस संदर्भ में ग्राम्शी का मत प्रासंगिक हो जाता है कि साहित्य के इतिहास को संस्कृति के इतिहास के अंग के रूप में अध्ययन करना होगा। तभी हम मानव की आदिम संस्कृति या लोक संस्कृति को समझेंगे; लोक मानस को समझेंगे, क्योंकि संस्कृति जनसमूह की उपज है। इसमें ही उस जनमानस की भाषा मौजूद है। इसी प्रकार इतिहास में परंपरा को खोजते हुए उसकी पुनर्रचना भी करना है; क्योंकि परंपरा का आधार लोक भी है; शास्त्र भी है। परंपरा की खोज इसलिए है कि भारतीय परंपरा वेद-पुराण और शास्त्रों से जुडा हुआ है। भारत में ये वेद पुराण की परंपरा ही नहीं; जन-जाति या क्षेत्रीय परंपराएँ भी हैं। इस तरह की लघु परंपरा को समाज से हटाया या मिटाया गया है। इस तरह की जन-जातियों की अलग पहचान, अलग इतिहास, अलग संस्कृति तथा अलग भाषा भी हैं जो दलित कविता का प्रमुख आधार है। परंपरा, संस्कृति, मूल्य, जातीय भावना आदि एक तरह से मानसिक पुनर्रचनाएँ होती हैं। इस पुनर्रचना की प्रक्रिया ज्ञान, सामाजिक तथ्यों और ऐतिहासिक यथार्थ से कटकर नये मिथक, बिंब तथा प्रतीकों को अपना लेती हैं। विशेषकर आधुनिक संदर्भ में ऐसी एक दृष्टि दलित कविता की विषय वस्तु और शिल्प में देख सकती है। भारतीय समाज व्यवस्था की असमानता पर आधारित जीवन की विसंगतियों एवं विषमताओं के बीज से दलित कविता का जन्म हुआ है जो सामाजिक बदलाव तथा जीवन मूल्यों का पक्षधर हैं। इसलिए दलित कविता की वस्तु स्वानुभूति

पर आधारित है। आज हमें दलित स्मृति के शक्ति-दर्शन को रूपायित करना है। 'अप्प दीपो भव' - दलित अपने दीपक को जलाने लगे हैं। स्वत्व बोध को पहचान लिया है। अतः हिन्दी दलित कविता दलित स्वत्व बोध के निर्माण में अपना सर्जनात्मक योगदान दे रही है। प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त विचार को ध्यान में रखते हुए दलित कविता का वस्तुपक्ष का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है।

चैथा अध्याय का शीर्षक है - **दलित कविता का शिल्पपक्ष : समाजशास्त्रीय अध्ययन**। दलित कवि समाज के यथार्थ को जिस भाषा में अभिव्यक्त करते हैं वही शिल्प का आधार है। प्रस्तुत अध्याय में दलित कविता की भाषा के प्रतिरोधी एवं विद्रोही स्वर, बिंब, प्रतीक, मिथक आदि का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। दलित कविता सीधे-सीधे सामंती-वर्णवादी मानसिकता को झकझोर देने वाली भाषा में बात करती है। मानव समाज के विकास क्रम के संदर्भ में भाषा और संस्कृति के बीच कारण- कार्य का संबंध है। लगता है कि भाषा पहले विकसित हुई और ज्ञान - रूप संस्कृति उसकी अनुगामी रही, वस्तुतः दोनों में साहचर्य है। भाषा विकास के साथ-साथ संस्कृति भी विकासोन्मुख होती रहती है। भाषा किस प्रकार अपने सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश से निर्मित और विकसित होती है, यह प्रत्येक भाषा के शब्द और अर्थ के परस्पर संबंध से समझा जा सकता है। शब्द का अर्थ उसके भाषागत परिवेश में ही समझा जा सकता है। दलित कविता की भाषा में इस परिवेश का विशेष महत्व है।

वर्ण-जाति विहीन समाज की स्थापना ही दलित कविता का उद्देश्य है। उसको प्रेरणा देनेवाले साहित्य में दलित भाषा का सौंदर्य देख सकते हैं। दलित कविता का सौन्दर्य प्रतिरोध, नकार और विद्रोही प्रवृत्ति में है। क्योंकि वह तथाकथित 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' में विश्वास नहीं करते थे। उनके लिए 'मनुष्य सर्वप्रथम मनुष्य है, यही सत्य है, मनुष्य की स्वतंत्रता शिव है, मनुष्य की मनुष्यता ही सौन्दर्य है'। स्पष्ट है कि दलित कविता के सौन्दर्य की अवधारणा के मूल में आदमी और आदमियत है।

दलित कविता की भाषा दलित संस्कृति की उपज है। इसकी भाषा अन्य कविता की भाषा से भिन्न, भाषा का पुनर्पाठ या पुनर्निर्माण ही है। दलित कविता का प्रतिरोधी स्वर समाज में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करना चाहता है। दलित कविता सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ सवाल-जवाब करती है। अतः सवाल-जवाब की प्रक्रिया को दलित कविता के शिल्पपक्ष का एक तत्व के रूप में लिया गया है। इसी तरह भाषा में व्यंग्य के प्रयोग का भी ऐतिहासिक महत्व है। समाज में विदूषकीय प्रक्रिया परंपरानुसार मिलता है। अतः दलित भाषा के अध्ययन में व्यंग्य को एक प्रमुख तत्व के रूप में लिया गया है। दलित कविता का प्रतीक जीवन यथार्थ को व्यक्त करनेवाला है। वह अपनी बात को व्यक्त करने केलिए नये प्रतीकों को अपनाया है। दलित कविता का बिंब अभिजन कविता के बिबं सम्बन्धी विचार से बिलकुल अलग है। बिंब की जो चित्रात्मकता है उसमें मानवीय और अमानवीय के बीच में जो संघर्ष है, उसका बिंबात्मक प्रस्तुतीकरण मिलता है। दलित कविता पुराने मिथकों को नयी परिभाषाएँ दे रही हैं। साथ में नये मिथकों को ढूँढ़ती भी हैं, जो दलित कविता में छिपी हुई सच्चाई को वाणी दे सकें। अंत में अध्ययन के उपसंहार प्रस्तुत किया गया है। जिसमें समाजशास्त्रीय अध्ययन की प्रमुखता को रेखांकित कर दलित कविता के (१९९०-२०१०) विभिन्न पहलुओं का अध्ययन प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध कालिकट- विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. ए अच्युतन जी के निर्देशन में संपन्न हुआ है।

मेरे गुरुवर आचार्य डॉ. ए. अच्युतन जी का आशिर्वाद मुझे हमेशा प्रोत्साहित करता रहा । मेरी हर शंकाओं का समाधान करते हुए समय-समय पर दिशा- निर्देश देने की उनकी दिलचस्पी ने इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने की प्रेरणा दी और उनके सामने मैं नतमस्त हूँ और हृदय से आभारी हूँ। मेरे गुरुवर ने लेखक डॉ. नामदेव, डॉ.

चमनलाल लेखिका डॉ. सुशीला टाकभौरे से मिलने और साक्षात्कार करने के लिए भी अवसर प्रदान किया।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कोव्वप्रत जी अन्य गुरुजन - डॉ. सेतुनाथ जी, डॉ. सुब्रमण्यन जी, डॉ. हेरमन जी, डॉ. फात्तिमा जीम जी, डॉ. मार्ग्रट जी, तथा कर्मचारियों के प्रति मैं अभार प्रकट करती हूँ।

शोध कार्य केलिए सामग्री चयन करने में कालिकट विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय, हिन्दी विभाग, अंग्रेज़ी विभाग, संस्कृत विभाग, मलयालम विभाग आदि पुस्तकालयों के कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

जब मैं एम. ए कालिकट विश्वविद्यालय में कर रही थी तब दलित साहित्य पढ़ने का अवसर मिला। हमारे कक्षा संचालन में अच्युतन सर का दलित साहित्य के प्रति जो लगाव है, उससे मैं बहुत प्रभावित हो गई थी। मैं ने मन में तय किया कि जब कभी शोध करुँगी तो दलित साहित्य में करूँगी। मुझे वह सुवर्ण अवसर मिला, मेरे निर्देशक के रूप में अच्युतन सर ही मिला, ये मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

आभारी हूँ मोहनदास नैमिशराय जी मुकेश मानस जी, रजनी तिलक जी, और डि. के गुप्ता जी जिन्होंने टेलिफोण तथा ई-मेल के माध्यम से मेरी शंकाओं का निवारण तथा सामग्री संकलन में बहुत मदद किया। उन समस्त लेखकों, संपादकों, अध्यापकों, मित्रों, बन्धुजनों, हितैषियों के प्रति मैं शुक्र गुज़ार हूँ, जिन्होंने किसी न किसी प्रकार मेरी मदद की है।

मेरे आदरणीय माता-पिता, बहन से भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ। मेरे जीवन साथी श्री रियाकतअली, बच्चें एवं परिवारवालों का पूर्ण सहयोग तथा प्रोत्साहन सदा समय मुझे मिलते रहे। उन सब के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

शोध कार्य के लिए सामग्री चयन करते समय मुझे हैदराबाद केंद्रीय विश्विद्यालय जाने का अवसर मिला। वहाँ के अध्यापक डॉ. वी कृष्णा जी ने मेरी बहुत सहायता की, उनके प्रति मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। वहाँ से हिन्दी के साहित्यकारों से मिलने का अवसर मिला। उन सब को मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। अंत में सभी हितैषियों को और एक बार फिर आभार प्रकट करती हूँ।

रसला एस.
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग